25/07/2020

Philosophy

Ethics (Sem/Sub)

Ajay Kumar
Assistant Professor
C.M.J College, Donwarihat.

The four Purushartha

पुरुषार्थ शब्द दो शब्दों के योग से बना है पुरुष और अर्थ शब्द प्रयोजन लक्ष्य या साध्य बतलाता है। अतः पुरुष के प्रयोजन या लक्ष्य को ही पुरुषार्थ कहते हैं परन्तु यह किसी एक पुरुष का प्रयोजन या लक्ष्य नहीं है। यह सभी पुरुषों का लक्ष्य या प्रयोजन है पुरुषार्थ चार माने गये हैं :- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये सभी पुरुषों के प्रयोजन हैं इन चार में से किसी एक की प्राप्ति के लिए ही कोई भी पुरुष कोई कार्य करता है। कुछ लोग तीन ही पुरुषार्थ मानते हैं जिसे त्रिवर्ग कहा जाता है आचार्य मनु ने धर्म अर्थ और काम नामक त्रिवर्ग को ही पुरुषार्थ माना है।

धर्म

धर्म सर्वप्रथम पुरुषार्थ माना गया है धर्म धर्म के बारे में अनेक पहलू है कहा में विचार के व्याख्या हैं।

अर्थ, काम और मोक्ष के मानव पुरुषार्थ पर भी यहां विचार करेंगे।

अर्थ

द्वितीय पुरुषार्थ को अर्थ कहा गया है। अर्थ की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जिससे सभी प्रयोजन की सिद्धि होती है वही अर्थ है। कौटिल्य के अनुसार अर्थ ही धर्म और काम का मूल है।

काम

काम शब्द बड़ा व्यापक है। इच्छा, कामना, वासना, स्पृहा, तृष्णा, [illegible] आदि सभी को काम ही माना गया है काम का स्वरूप बतलाते हुए महाभारत में कहा गया है कि पांच ज्ञान इन्द्रियों मन और बुद्धि के साथ इनका जो विषयों के साथ सम्बन्ध स्थापित होता है

मोक्ष

मोक्ष अन्तिम पुरुषार्थ है। इसे परम पुरुषार्थ भी कहा गया है। मोक्ष मोक्ष शब्द सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा का ~~[illegible]~~ माना है। आधिभौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक इन दुःखों के कारण व्यक्ति दुःखी रहता है,